अध्याय – 8
प्रवृत्ति समूह (स)

8.1 सिलाई के निम्नलिखित कार्य करना–

8.1.1 कपड़े का थैला–

आधुनिक युग में पहनावे का महत्व खाने से भी अधिक बढ़ गया है। पहले के लोग भोजन अधिक अच्छा हो इसको अधिक महत्व देते थे। अब समाज में पहनावा देखकर व्यक्ति का स्तर नापते हैं और वे उच्च स्तर के लोगों के बराबर पहचानना चाहते हैं। थोड़ी सी चतुराई से अपनी पहचान काफी बना सकते हैं। सबसे अच्छी पहचान है सुन्दर एवं साफ आकर्षक थैला अगर व्यक्ति के हाथ अच्छा थैला हो तो उसके बारे में बिना बोले बिना पूछे उसके रहने और उसके व्यक्तित्व को पहचाना जा सकता है।

इसके लिए बैग या थैला साधन है जिसे हर व्यक्ति को हर समय अपने पास रखना पड़ता है क्योंकि आवश्यक छोटी वस्तुओं को एक साथ हाथ में लेकर हम नहीं चल सकते हैं। इसके लिए थैले की आवश्यकता होती है। बाजार से सामान रख लाने के लए, यात्रा करते समय सामान रखने के लिये आजकल महिलाओं को एक फैशन के तौर पर पर्स या बैग रखना पड़ता है।

थैला दो प्रकार से बनाया जा सकता हैं– (1) साधारण कपड़े द्वारा (2) केनवास या फोम लैदर से

साधारण कपड़े के थैले की सामग्री

(1) मोटा कपड़ा या पसन्द के अनुसार कपड़ा

(2) उसी रंग का धागा

(3) सिलाई मशीन

(4) फैन्सी हैण्डल

बनाने की विधि –

साधारण थैले के लिए 1 फुट चौड़ा व डेढ़ फीट लम्बा कपड़ा लें। सबसे पहले कपड़े को सीधा लम्बाई–चौड़ाई में कटिंग कर लें और बराबर कर लें। इसके पश्चात मुँह वाले भाग की तरफ आधा इंच कपड़े को मोड कर अन्दर की तरफ सिलाई कर लें। इसके बाद कपड़े को आधी तरफ मुँह के हिस्से को मिलाकर अच्छे से दोनों तरफ सिलाई कर दें। इस प्रकार यह थैली आकार का बन जायेगा। इसके पश्चात मुँह पर आधा इंच चौड़ी और 8 इंच लम्बी इसी कपड़े की दो पट्टी बनाये और मुँह पर साढे तीन इंच बाँये से साढे तीन इंच दाँये थोडा कर वही के एक सिरा बाँये दूसरा सिरा दाँयें तरफ सिलाई कर दें। इसी प्रकार दूसरी तरफ दाँई के हिस्से की इसी के हिसाब से दूसरी पट्टी की सिलाई कर दें। साधारण बैग तैयार हो जायेगा।

आजकल फैशन से पट्टी नहीं लगाकर विभिन्न प्रकार हैण्डल लगाते हैं जो बाजार में लोहे, एल्मोनियम, लकड़ी व प्लास्टिक के बने मिलते हैं। उनको थैले के मुँह के दो तरफ लगाते हैं। इससे थैले की सुन्दरता एवं पकड़ने में आसानी रहती है। निम्नलिखित चित्र मालूम हो –

(1) केनवास –

मोटी जीन जो मोमजामा की बनी हुई होती है। यह वाटर प्रुफ होती है। लेकिन इस पर कोई अन्य पदार्थ नहीं लगाया जाता है। इससे बड़े थैले, स्कूल बैग, बिस्तर बन्द, पानी की मशकें आदि बनती है।

(2) फॉर्म लेदर –

यह भी मोटे जीन पर केमकिल पदार्थ के आवरण से युक्त होती है। इसमें अपनी चमक होती है। यह चिकनापन लिये होती है। इससे ऐयर बैग, ट्रेवलिंग बैग, मिनी बेग, सोफे की गद्दियाँ, थैले, बिस्तर बन्द, लेडिज हैण्ड बैग इत्यादि बनते हैं।

(3) रेगजीन –

यह फोम से पतला होता है। इसका प्रयोग गत्ते के कार्य में किया जाता है। यह भी वाटर प्रुफ होता है।

उपयोगी सामान एवं औजार –

केनवास, फॉर्म लेदर, रेगजीन, चमड़े व गत्ते के लम्बे टुकड़े, मोटी कैंची, स्केल, मार्कर

सिलाई मशीन – मशीन द्वारा तीन तरह की सिलाई हो सकती है। आवश्यकतानुसार टाँकों की सिलाई छोटी–बड़ी की जा सकती है। फोम लैदर या रेगजीन की सिलाई करते समय तेल का हाथ यदि फोम लैदर या रेगजीन पर सिलाई करने वाले भाग पर लगा दिया जाय तो मशीन की चाल में अन्तर पड़ जाता है और मशीन में रूकावट नहीं आती है न ही बार–बार रूकावट पैदा करती है और धागा टूटता भी नहीं है। जो समय व शाक्ति की हानि नहीं करता है।

8.1.2 स्कूल बैग –

(1) 10 x 12 (2) 12 x 14 (3) 16 x 16

आवश्यक सामान – स्कूल बैग में कुल 5 भाग होते हैं।

(1) आगे का भाग

(2) पीछे का भाग

(3) गेसिट पट्टी

(4) पॉकेट

(5) पॉकेट कवर

कटाई क्रम के अन्तर्गत पहले आगे का भाग 16" x 16" पीछे का भाग 16 x 23 एवं गेसिट पट्टी 48" x 5 " कटिंग करेंगे। इसके पश्चात आगे के भाग के ऊपर पाईपिंग निकल कर ग्रेसिट पट्टी को जोड़ेगे, जाड का टाँक बाहरी भाग में होगा, इसके पश्चात जेब के भी पायपिंग निकाल कर आगे के भाग में नीचे लगायेंगे तथा पॉकेट कवर में कुछ गोलाई लेते हुए पाईपिंग निकाल कर उसको सिलाई कर देंगे इसके बाद हम पीछे के भाग में भी सिलाई (जोड की) बाहर रखकर लगा देंगे। इसके पश्चात पाईपिंग आगे के भाग में जो बाहरी सिलाई की है, उसको दबाने के लिए पाईपिंग निकाल देंगे तथा पीछे के भाग में भी हम बाहरी सिलाई बनाने के लिये पाईपिंग निकाल देंगे। इसके पश्चात सोल्डर बेल्ट को 36" x 2" कटिंग किया जायेगा उसको दोनों तरफ मोड़ कर ऊपर सिलाई कर देंगे। इसके पश्चात दोनों तरफ गुटमस द्वारा छेद बनाकर शोल्डर बेल्ट को लगा देंगे। यदि हम डी लगाना चाहते हैं तो दोनों तरफ डी लगा सकते हैं। शोल्डर बेल्ट में बक्कल डाल देंगे। यह बक्कल बेल्ट को छोटा बड़ा बनाने के काम आता है। इसके बाद पॉकेट के दोनों तरफ मध्य में क्लिप लगा देंगे। जिससे पॉकेट में डाली हुई वस्तुऐं बाहर नहीं गिरे। इस

प्रकार स्कूल बैग तैयार हो जाएगा।

8.1.3 शॉपिंग बैग या सादा थैला

नाप (1) 16" x 12" (2) 12" x 14' (3) 14" x 16"

आवश्यक सामग्री –

केनवास, रेगजीन, झालर, रील धागा, हैण्डलूम का कपड़ा

विधि :–

सादे थैले में आगे का भाग, पीछे का भाग, गेसिट व हैण्डल कटिंग किये जाते हैं। साईज 10" x 12" के लिए हम आगे पीछे के दो भाग 10" x 12" के नाप से कटिंग करेंगे। इसके पश्चात 12" x 12" कटिंग करेंगे एवं चार फूल्प काटेंगे तथा गेसिट पट्टी 34" x 4" काटेंगे फिर दोनों भाग जो 10" x 12" के कटिंग किए उन पर पाईपिंग निकालेंगे इसके पश्चात गेसिट पट्टी के दोनों तरफ पाईपिंग अर्थात जो 4" चौड़े भाग हैं, पाईपिंग निकालेंगे फिर आगे के भाग गेसिट पट्टी पाईपिंग से जोड़ेंगे। जोड़ की सिलाई बाहर रखते हुए जोड़ देंगे। तथा पीछे का भाग उसी क्रिया के अनुसार जोड़ देंगे। इसके पश्चात पाईपिंग निकाल देंगे। फिर हेण्डल की सिलाई कर देंगे तथा हेण्डल लगा देंगे इसके नीचे व चारों तरफ पाईपिंग के स्थान पर हम झल्लर भी निकाल सकते है जिससे इसकी सुन्दरता और बढ़ सकती है।

8.1.4 अण्डर वियर बनाना

नाप – लम्बाई – 12'', हिप (सीट) – 24'', मोहरी – 17'', कमर – 22''

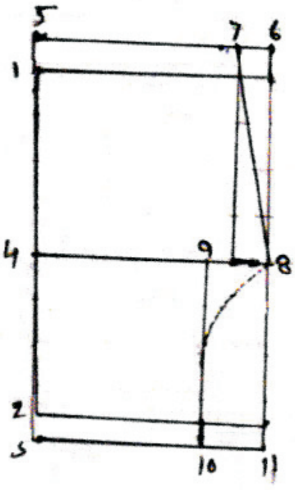

विवरण

1 से 2 अण्डर वियर की लम्बाई 12"

2 से 3 मोड़ के लिये लम्बाई – 1 या डेढ़ इंच 1½"

1 से 5 नेफा के लिए मोड़ 2"

1 से 4 सीट या हिप के नाप का ⅓+1 = 9"

5 से 6 सीट या हिप का ⅓+3=11"

6 से 11 = 12+2+1=15"

6 से 7 = 1½"

3 से 10 = मोहरी के नाप का ½ भाग + ½=9

8 से 7 = को मिलाइये

8 से 10 = मोहरी की गोलाई बनाइये

8.1.5 बेबी चड्डी–

नाप – हिप सीट – 24'', लम्बाई – 10'', मोहरी – 14''

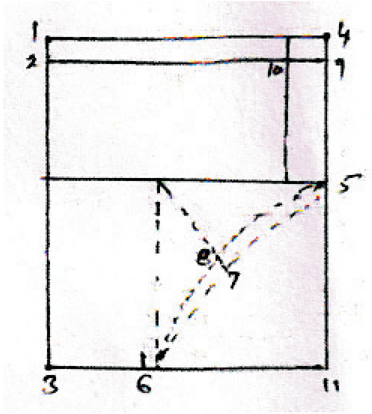

विवरण

2 से 3 चड्डी की लम्बाई 10"

1 से 2 नेफा के मोड़ के लिये = 1½"

1 से 4 सीट या हीप के नाप 3 भाग =8

4 से 11 लम्बाई +1½=11½"

3 से 6 हिप या सीट का 1/12 भाग +1

6 से 5 मोहरी का नाप का ½ भाग

7 से 8 = 1½"

5–8–6 = मोहरी की गोलाई बनाइये

9 से 10 = को मिलाइये

5 से 10 = को मिलाइये

8.16 बनियान बनाना

नाप – लम्बाई – 40'', सीना – 36'', गले का नाप – 6''

विवरण

0 से 1 पूरी लम्बाई =40"

0 से 2 सीने का ¼ भाग +1=10"

3 से 1

0 से 4 सीने 1/6 भाग = 6"

4 से 5 गोला आधार बनाये

0 से 6 गले नाप ½ भाग

0 से 7 साने का 1/6 भाग

6 से 7 गले का आकार

0 से 3 सीने ¼ भाग

9 से 8 मोड़ 1 इंच

2 से 5 आस्तिन के नाप के ½ या सीने का ¼ भाग

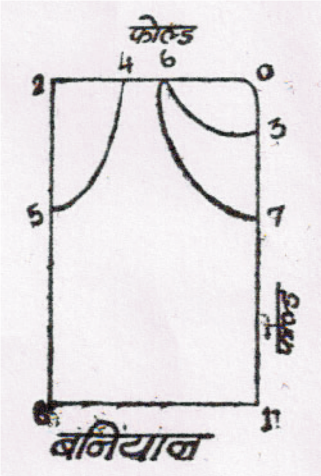

8.1.7 सादा पायजामा

नाप – लम्बाई – 40′′, मोहरी – 24′′, सीट (हिप) – 36′′

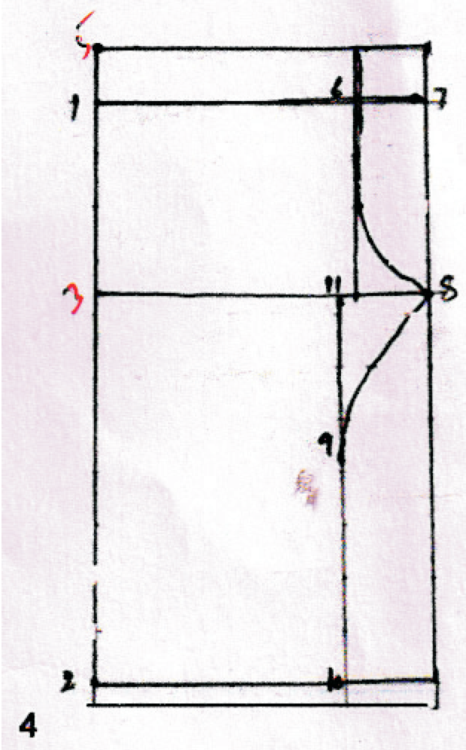

विवरण

1 से 2 पायजमा की लम्बाई = 40"

1 से 5 नेफा का मोड = 20"

2 से 4 मोहरी के मोड के लिये = 2"

1 से 3 सीट (हिप) की नाप ⅓ भाग + 1 = 13"

1 से 7 सीट के नाप ⅓ भाग = 9

6 से 7 = 1½"

2 से 10 मोहरी के नाप का ½+½" सिलाई 12½"

8 से 11 सीट (हिप) के नाप का 1/6 भाग

8 से 6 आसन की कटिंग रेखा

8.2 बुनाई के निम्नलिखित कार्य करना

8.2.1 बुनाई कला :–

गृहस्थ में बुनाई कला का भी विशेष महत्व है। अगर बालिकायें बुनाई कला जानती है तो घर पर ही सस्ते दामों में सुन्दर से सुन्दर वस्त्र तैयार कर लेती है। इससे वस्त्र सस्ते मूल्य में बनाकर पैसो की बचत कर सकती है तथा अवकाश एवं खाली समय का सदुपयोग करने के लिए ऊन की बुनाई एक प्रमुख साधन है। विभिन्न रंगों की ऊन लेकर रंगों का मेचिंग करके वस्त्र, जुराब, दस्ताने, टोपी आदि बनाये जा सकते हैं।

8.2.2 बुनाई कला की उपयोगिता :–

(1) घर पर ही मनपसन्द रंग तथा डिजाइन के वस्त्र बुनाई द्वारा आसानी से तैयार किए जा सकते है।

(2) बुनाई से गृहणी व छात्राऐं अपने खाली समय का उपयोग कर सकती है। जिससे सस्ते मूल्य पर वस्त्र तैयार हो जाते है।

(3) घर पर वस्त्र तैयार करने से नाप के अनुसार अच्छे कपड़े तैयार किए जा सकते है।

(4) हाथ से बुने हुए वस्त्रों को फटने पर मरम्मत आसानी से की जा सकती है।

बुनाई के लिए ऊन का चुनाव करना पड़ता है :–

(1) कुमारी ऊन – ऐसी समस्त ऊन को कुमारी ऊन कहते हैं जिसका ऊनी वस्त्र बनाने के लिए पहले उपयोग नहीं किया गया है।

(2) मेमनों की ऊन – एक वर्ष से कम उम्र की भेड़ की पीठ से काटे जाने वाले बालों द्वारा तैयार ऊन को मेमनों की ऊन कहते हैं।

(3) होगेल्याहोगऊन – उस ऊन को कहते हैं जो एक वर्ष की आयु की भेड़ पर से पहली बार काटी जाती है।

(4) वेदर ऊन – एक वर्ष की आयु की भेड़ से कटी हुई हो लेकिन उस भेड़ से पहले भी ले ली गई और दुबारा और काट ली गई हो।

(5) क्लीस ऊन – जीवित भेड़ों पर से उतरी हुई ऊन को क्लीस ऊन कहते हैं।

(6) पुल्ड ऊन – मरी हुई भेड़ों के शरीर से खींचकर उतारी गई ऊन को पुल्ड ऊन कहते हैं।

बाजार में भी कई प्रकार की ऊन मिलती है। जैसे पतली, मुलायम, खुरदरी, चुभने वाली, रोये वाली व मोटी आदि। अतः ऊन का चुनाव करना वस्त्र पर निर्भर करता है। इसका बहुत महत्व है। ऊन कई रंगों की मिलती है। ऊन का रंग का चुनाव निम्न प्रकार करना चाहिएः–

(1) प्रकार –

ऊन मोटाई एवं रचना में कई प्रकार की बाजार में मिलती है। ऊन की मोटाई किसी वस्त्र के बनाने व पहनने वाले की रूचि एवं किस मौसम के लिए चाहिए (स्थान तापक्रम के अनुसार) पर निर्भर करता है। उदाहरण बच्चों के वस्त्र, शाल के लिए मुलायम ऊन चाहिए तो बड़े व्यक्तियों के लिये मोटी ऊन की आवश्यकता पड़ती है।

(2) रंग –

ऊन के रंग का चुनाव आदमी के शरीर के वर्ण के अनुसार होना चाहिए। गोरे आदमी के लिए गहरे रंग अच्छे रहते हैं किन्तु सांवले वर्ग के व्यक्ति पर गहरे रंग अच्छे नहीं लगते हैं।

(3) सलाई का चुनाव –

सलाई इस प्रकार की होनी चाहिए कि न तो उस पर जंग हो न टेढ़ी मेढ़ी हो। सलाई ऊन की मोटाई पर निर्भर करती है। जैसे एक या दो प्लाई की ऊन के लिए 8 या 9 नम्बर की सलाई सही रहती है। इसका कारण यह कि अगर बारीक ऊन को मोटी सलाई से बना जायेगा तो छिर छिरी बुनाई होगी।

8.2.3 डिजाइन का चुनाव –

बुनाई करने से पहले डिजाइन का चुनाव करना भी अति जरूरी है। डिजाइन का चुनाव करते समय पहनने वाले व्यक्ति के शरीर की बनावट तथा आयु का ध्यान रखना चाहिये। जैसे पतले व लम्बे व्यक्ति के लिए लम्बी धारी वाला डिजाइन कभी अच्छी नहीं होगी अगर लम्बी धारी का डिजाइन चुनाव किया गया तो व्यक्ति अधिक लम्बा महसूस होगा। मोटे तथा नाटे व्यक्ति के लिए आड़ी धारी का डिजाइन ठीक नहीं रहती है।

8.2.4 बुनाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें –

(1) बुनाई में समानता तथा एकता –

बुनाई करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बुनाई एक सी प्रतीत हो तथा फन्दों में

समानता रहे। बुनाई कहीं से ढीली तथा कहीं से कसी नहीं होनी चाहिये। इससे बुनाई अच्छी नहीं लगती है। जल्दी–जल्दी तथा एक ही गति से बुनाई एक सी आती है तथा धीरे–धीरे बुनने में प्रायः एक सी नहीं आती है।

(2) बुनते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि अगर बुनाई छोड़नी है तो लाइन पूरी होने पर छोड़नी चाहिये। नहीं तो सलाइयाँ इधर–उधर खिंच जाने से फन्दे ढ़ीले हो जाते हैं या सलाई से बाहर आ जाते हैं।

(3) **चिन्ह का धागा –**

जहाँ पर घटाना व बढ़ाना शुरू करना हो तो चिन्ह डालने के लिए दूसरे रंग के धागे का प्रयोग करना चाहिये। इसक चिन्ह के लगाने से फन्दों को गिनने में सुविधा रहती है। बुनाई समाप्त होने पर चिन्ह का धागा निकाल लेना चाहिये।

(4) **प्रेस करना –**

बुनाई जब समाप्त हो जाये तो वस्त्र पर बड़ी सावधानी से प्रेस कर देना चाहिये। प्रेस कपड़े को उल्टा करके करना चाहिये। वस्त्र पर सीधे प्रेस नहीं करनी चाहिए। वस्त्र पर पतले मलमल के गीले कपड़े को बिछाकर प्रेस करनी चाहिये। प्रेस करने में यह ध्यान रखना चाहिये कि फन्दे खिंच न जाये।

(5) बुनाई को सुन्दर बनाने के लिए ऊन का गोला बनाने की विधि, फन्दे चढ़ाने उतारने की विधि, ऊन जोड़ने आदि की विधि अच्छी प्रकार से आनी चाहिए।

(6) **ऊन को गोला बनाना** – ऊन का गोला बहुत ही सावधानी से बनाना चाहिये। अगर ऊन का गोला कसकर बनाया गया तो ऊन खिंच जायेगी तथा खराब होती है। गोला बनाने के लिए ऊन को 3–4 अंगुलियों के बीच रखकर ऊपर से ऊन लपेटनी चाहिए। इन अंगुलियों को बार–बार निकालना चाहिए ताकि ऊन लिपटने से गोला अच्छा लगे तथा ऊन मुलायम रहे।

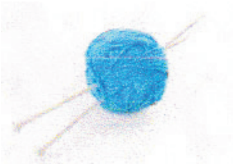

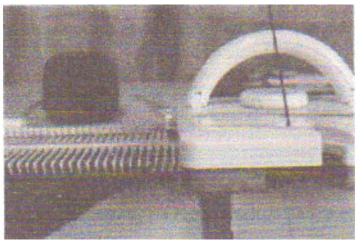

8.2.5 बुनाई मशीन का रख रखाव

बुनाई मशीन में रखरखाव पर पूर्ण ध्यान रखना चाहिए ताकि मशीन ठीक चले। प्रत्येक टेक्नीशियन या बुनाई वाले के लिए यह आवश्यक है कि जिस मशीन अथवा औजार से वह काम करता है उसमें उत्पन्न होने वाली छोटी–छोटी खराबियों को अच्छी प्रकार से समझो तथा उनको ठीक करने की क्षमता रखता हो। प्रायः मशीन की देखभाल के निम्न नियम है :–

(1) बुनाई मशीन को बेकार नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि अधिक समय तक मशीन को बगैर काम में लिए रखने से मशीन जाम होने का भय रहता है।

(2) मशीन को सर्दी, वर्षा तथा धूप से बचाना चाहिए।

(3) मशीन की समय–समय पर सफाई करते रहना चाहिए। सफाई करके तेल भी देना चाहिए। तेल उन स्थानों पर देना चाहिए जहाँ से मशीन का मूवमेंट अधिक होता है।

(4) मशीन में तेल डालते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि तेल मशीन का ही हो।

8.2.6 बुनाई मशीन के दोष :–

(1) मशीन का भारी चलना –

मशीन को प्रतिदिन उपयोग में लेना चाहिए तथा सफाई करके तेल डालना चाहिए।

(2) ऊन का धागा –

दबाव ठीक करके यह देखना चाहिये कि ऊन का धागा कमजोर तो नहीं है।

(3) मशीन की बुनाई खराब आना –

ऊन का धागा देख लेना चाहिए तथा मशीन के दाँते आदि भी देखने चाहिए। खराब बुनाई ठीक करने में ऊन की खिंचाव का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

(4) चूक देना –

दांतो को ठीक करना चाहिए।

8.2.7 बुनाई के लिए जरूरी सामान

बुनाई के लिए निम्नलिखित सामान की आवश्यकता होती है :–

(1) मोटी सलाइयों के कई किस्म के जोड़े

(2) पतली सलाइयों के कई किस्म के जोड़े

(3) हाथी दांत या सींग का क्रोशिया

(4) फंदे अलग करने के लिए स्वीच होल्डर

(5) गटे पार्चे की सिलाई

(6) जर्मनी की सलाई नम्बर 8

(7) जर्मनी की सलाई नम्बर 12 और नम्बर 13

(8) सिर का आँकड़ा या काँटा

(9) कैनवेज के काम की एक सूई सीने के लिए

8.2.8 बुनाई के सुन्दर बनाने के लिए निम्न बातों का ध्यान देना चाहिए

(1) ऊन अच्छी बटी हुई और सलाई पतली हो।

(2) बहुत कसा या ढीला न हो

(3) गटे पार्चे की सिलाई से बुनने से ऊन में कालापन नहीं आता है।

(4) जो चीज बनानी हो उसको कागज पर काट ले और बुनते जाए और नापते जाए।

(5) सीने में किवाड़ी की छांट गहरी होनी चाहिए।

(6) पीठ की छांट किवाडी से बहुत कम होनी चाहिए।

(7) स्वेटर का सिलाते वक्त आस्तीन का जोड़, किवाड़ी तथा पीठ वाला जोड़ संग मिला रहेगा। दो रंग के ऊन से लगातार बुनना हो तो पतला बटा हुआ ऊन लें।

जॉकेट, स्वेटर, कोट, वेस्टकोट, फ्रॉक की जरा ढीली बुनाई होने चाहिए।

स्त्रियों का कोट, आस्तिन, जेब की पट्टी, जेब के नीचे की थैली का हिस्सा, गले और सीने की पट्टियां अलग–अलग बुनकर पीछे टांक देना।

गले की और आगे की पट्टी चौड़ी अच्छी रहती है।

फ्रॉक में पत्तीदार बुनकर कुछ सलाइयों के बाद दूसरे मिलते हुए रंग से 4 धारी को डाल दें जो सीधे तरफ से दिखाई दे। तीन चार जगह पर इस तरह की धारी डालें।

8.2.9 बॉर्डर, गला व बाहें बनाने की विधि

स्वेटर शुरू करने के लिए जिस व्यक्ति के लिए बना रहे है उसके अनुसार फंदे डाल दे तथा दूसरी सलाई से एक उल्टा और एक सीधा बनाये, फिर दो–दो लाइन छोड़कर एक–एक फन्दा बढ़ाते जायें। आठ या दस सलाई के बाद बॉर्डर बन्द कर दें। बॉर्डर बनाने के बाद एक सलाई सीधी निकालें तथा इच्छानुसार डिजाइन बना लें। सादे स्वेटर के लिए एक सलाई सीधी व एक उल्टी बुनते चले।

गला भी दो प्रकार से बनाया जाता है। एक तो उसी में फंदा बुन कर व दूसरा अलग से पट्टी बनाकर स्वेटर के साथ बनाये जाने वाले गले के लिए मौजे की तीन सलाइयाँ लेते हैं। उस पर फन्दा डालकर 6 सलाई बाद गला बन्द कर लेते हैं। या साधारण सलाइयों के द्वारा भी अलग से पट्टी बनाकर स्वेटर के साथ देते हैं।

आस्तिन भी दो प्रकार से बनायी जाती है। एक तो स्वेटर में से फंदे उठा–उठाकर व अलग से बुनकर या कलई की तरफ से शुरू करके स्वेटर से उठाकर बुनाई करने के लिए जहां से आस्तिन की छटाई की गई है। वहाँ किनार पर से फंदे उठाते जाते हैं तथा कुहनी तक समान बनाते है। कुहनी के बाद दो घर घटाते जाते है और नीचे बॉर्डर बुन लेते हैं। अलग से आस्तिन बनाने के लिए बॉर्डर बुनकर कुहनी तक बुन लेते है।

अभ्यास प्रश्न–

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. थैले कितने प्रकार की सामग्री से बनाये जा सकते हैं–

   (अ) 2 (ब) 4 (स) 5 (द) 6

2. निम्न में से क्या ऊन का एक प्रकार नहीं है–

   (अ) कुमारी (ब) पुल्ड (स) क्लोस (द) विन्ड

3. ऊन कितने प्रकार की होती है

   (अ) 2 (ब) 4 (स) 4 (द) 6

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. साधारण कपड़े की थैले को बनाने की कौन–कौन सी सामग्री है?
2. केनवास के बैग बनाने के लिए कौन–कौन सी सामग्री की आवश्यकता होती है?
3. फॉर्म लेदर किसे कहते हैं?
4. फॉर्म लेदर से कौन–कौन सी चीजें बनाई जाती है?

5. बुनाई करते वक्त किन–किन सामग्री की आवश्यकता होती है?
6. कुमारी ऊन किसे कहते हैं?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. साधारण थैला कैसे बनाया जाता है लिखो।
2. बेबी चड्डी बनाने के लिए कौन–कौन से नाप लिए जाते हैं व चित्र द्वारा विवरण लिखिए?
3. साधारण पायजामा किस प्रकार बनाया जाता है? समझाए।
4. बुनाई कला की उपयोगिता को लिखिए।
5. बुनाई करते समय ध्यान देने योग्य कौन–कौन सी बातें हैं?
6. बुनाई मशीन का रखरखाव कैसे किया जाता है?
7. बुनाई मशीन के कौन से दोष है?
8. बुनाई के लिए कौन–कौन सी सामग्री चाहिए।
9. बुनाई को सुन्दर बनाने के लिए कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए।

उत्तरमाला (वस्तुनिष्ठ प्रश्न) :

1. (अ) 2. (द) 3. (द)